अंक योजना

प्रतिदर्श प्रश्न पत्र 2025-26

विषय - हिंदी (आधार)

विषय कोड – (302)

कक्षा - बारहवीं

निर्धारित समय: 03 घंटे **अधिकतम अंक : 80 अंक**

सामान्य निर्देश :-

- अंक योजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना है।
- वस्तुपरक प्रश्नों के उत्तरों का मूल्यांकन निर्दिष्ट अंक योजना के आधार पर ही किया जाए।
- वर्णनात्मक प्रश्नों के अंक योजना में दिए गए उत्तर बिंदु अंतिम नहीं हैं। ये सुझावात्मक एवं सांकेतिक हैं।
- यदि परीक्षार्थी इन सांकेतिक बिंदुओं से भिन्न, किंतु उपयुक्त उत्तर दे तो उसे अंक दिए जाएँ ।
- मूल्यांकन कार्य निजी व्याख्या के अनुसार नहीं, बल्कि अंक योजना में निर्दिष्ट निर्देशानुसार ही किया जाए।

प्रश्न संख्या	**खंड - क (अपठित बोध)**	**अंक (18)**
1.	अपठित गद्यांश पर आधारित प्रश्न	(10)
(क)	ii मिट्टी और धरती	1
(ख)	iv बाल मनोविज्ञान की समझ होती है।	1
(ग)	iii केवल कथन (I), (II) और (III) सही हैं।	1
(घ)	समाज की संस्कृति एवं जीवन की गुणवत्ता।	1
(ङ)	शिक्षक वह आधार है, जिससे मानव पीढ़ी-दर-पीढ़ी हर प्रकार से सहायता पाता है तथा ज्ञान अर्जित कर काम करता है।	2
(च)	शिक्षक युवा मन को तैयार करते हैं, मार्गदर्शन करते हैं कि वे सफल हों और विकास का केंद्र बनें।	2

(छ)	मिट्टी में सही अनुपात में तत्त्व उपलब्ध होते हैं और जो पौधे उसमें उग रहे हैं, मिट्टी उन्हें पोषक तत्त्व उपलब्ध कराती है, शिक्षक अपने अंदर परंपराओं को संजोते हैं। शिक्षक विद्यार्थियों के आवेग को समेटते हैं और जो नौजवान विद्यार्थी शैतान होते हैं, उन्हें रास्ते पर लाते हैं।	2
2.	अपठित पद्यांश पर आधारित प्रश्न	**(08)**
(क)	Ii बड़े लोग	1
(ख)	ii बड़े लोग अपने गुणों के कारण अकेले रह जाते हैं	1
(ग)	iii मानव के एकाकी होने के कारण का विश्लेषण	1
(घ)	कवि के अनुसार आरोहियों के लिए पहाड़ की ऊँचाई और उसका प्राकृतिक सौंदर्य आमंत्रण का कारक है।	1
(ङ)	पहाड़ को अभिनंदन का अधिकारी उसकी भौगोलिक विशेषताओं के कारण बताया गया है। पेड़ ना लगना, पौधे – घास ना जमना, बहती नदी, अत्यधिक ऊँचाई इत्यादि।	2
(च)	कवि को पहाड़ की ऊँचाई व उसकी अन्य विशेषताओं के समक्ष सभी कुछ लघु लगता है। पहाड़ की ये ऊँचाई तथा विशेषताएँ देखने के बाद व्यक्ति स्वतः हीन भाव से भर जाता है।	2
प्रश्न संख्या	**खंड – ख (अभिव्यक्ति और माध्यम पुस्तक पर आधारित प्रश्न)**	**अंक (22)**
3.	दिए गए विषयों में से किसी **एक** विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख :- आरंभ -- 01 अंक विषयवस्तु -- 03 अंक प्रस्तुति -- 01 अंक भाषा -- 01 अंक	**01x06 =06**
4.	किन्हीं **चार** प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर :-	**04x02 = 08**

(क)	अखबार 24 घंटे में एक बार या साप्ताहिक पत्रिका सप्ताह में एक बार प्रकाशित होती है। अखबार या पत्रिका में समाचारों या रिपोर्ट को प्रकाशन के लिए स्वीकार करने की एक निश्चित समय-सीमा होती है, जिसे डेडलाइन कहते हैं।	2
(ख)	• जिसमें आम बोलचाल के शब्दों का प्रयोग हो। • जो समाचारवाचक आसानी से पढ़ सके। • जिसमें आम बोलचाल की भाषा के साथ-साथ सटीक मुहावरों का इस्तेमाल हो। • जिसमें सामासिक और तत्सम शब्दों की बहुलता हो।	2
(ग)	• संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होने वाले संपादकीय को अखबार की आवाज़ माना जाता है। • संपादकीय के ज़रिये अखबार किसी घटना, समस्या या मुद्दे के प्रति अपनी राय प्रक ट करते हैं। • संपादकीय किसी व्यक्ति विशेष का विचार नहीं होता इसलिए उसे किसी के नाम के साथ नहीं छापा जाता। • संपादकीय लिखने का दायित्व उस अखबार में काम करने वाले संपादक और उन के सहयोगियों पर होता है। • आमतौर पर अखबारों में सहायक संपादक, संपादकीय लिखते हैं। • कोई बाहर का लेखक या पत्रकार संपादकीय नहीं लिख सकता है। ***उपर्युक्त बिंदु सांकेतिक हैं। अन्य बिंदु विचारणीय व स्वीकार्य हो सकते हैं।***	2
(घ)	• अखबारों में समाचारों के अलावा भी अन्य कई तरह का पत्रकारीय लेखन छपता है । • इनमें फीचर प्रमुख है। • फीचर एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है जिसका उद्देश्य पाठ कों को सूचना देने, शिक्षित करने के साथ मुख्य रूप से उनका मनोरंजन करना हो ता है।	2
(ङ)	खबरें भी कई तरह की होती हैं– राजनीतिक, आर्थिक, अपराध, खेल, फ़िल्म, कृषि, कानून, विज्ञान या किसी भी और विषय से जुड़ी हुई।	2

	संवाददाताओं के बीच काम का विभाजन आमतौर पर उनकी दिलचस्पी और ज्ञान को ध्यान में रखते हुए किया जाता है। मीडिया की भाषा में इसे बीट कहते हैं। एक संवाददाता की बीट अगर अपराध है तो इसका अर्थ यह है कि उसका कार्यक्षेत्र अपने शहर या क्षेत्र में घटनेवाली आपराधिक घटनाओं की रिपोर्टिंग करना है। अखबार की ओर से वह इनकी रिपोर्टिंग के लिए जिम्मेदार और जवाबदेह भी है। ***उपर्युक्त बिंदु सांकेतिक हैं। अन्य बिंदु विचारणीय व स्वीकार्य हो सकते हैं।***	
5.	किन्हीं **दो** प्रश्नों के लगभग 80 शब्दों में उत्तर :-	**02x04 = 08**
(क)	• जहाँ कहानी का संबंध लेखक और पाठक से जुड़ता है वहीं नाटक लेखक, निर्देशक, पात्र, दर्शक, श्रोता एवं अन्य लोगों को एक-दूसरे से जोड़ता है। • चूँकि दृश्य का स्मृतियों से गहरा संबंध होता है इसलिए नाटक एवं फ़िल्म को लोग देर तक याद रखते हैं। • यही कारण है कि गोदान, देवदास, उसने कहा था, सद्गति आदि के नाट्य रूपांतरण कई बार हुए हैं और कई तरह से हुए हैं। ***उपर्युक्त बिंदु सांकेतिक हैं। अन्य बिंदु विचारणीय व स्वीकार्य हो सकते हैं।***	4
(ख)	• रेडियो नाटक में संवाद की विशेषताएँ – • रेडियो नाटक में पात्रों संबधी तमाम जानकारी हमें संवादों के माध्यम से ही मिलती हैं। उनके नाम, आपसी संबंध, चारित्रिक विशेषताएँ, ये सभी हमें संवादों द्वारा ही उजागर करना होता है। • भाषा पर भी विशेष ध्यान रखना होगा। वो पढ़ा-लिखा है कि अनपढ़, शहर का है कि गाँव का, क्या वो किसी विशेष प्रांत का है, उसकी उम्र क्या है, वो क्या रोज़गार-धंधा करता है। इस तरह की तमाम जानकारियाँ उस चरित्र की भाषा को निर्धारित करेंगी। • फिर पात्रों का आपसी संबंध भी संवाद की बनावट पर असर डालता है। एक ही व्यक्ति अपनी पत्नी से अलग ढंग से बात करेगा, अपने नौकर से अलग ढंग से, आपने बॉस के प्रति सम्मानपूर्वक रवैया अपनाएगा, तो अपने मित्र के प्रति उसका बराबरी और गरम-जोशी का व्यवहार होगा। • रेडियो क्योंकि मूलतः संवाद प्रधान माध्यम है, इसलिए यहाँ इसका खास ध्यान रखना होता है।	4

	• रेडियो में कौन किससे बात कर रहा है, हम देख नहीं पाते इसलिए संवाद जिस चरित्र को संबोधित है, उसका नाम लेना ज़रूरी होता है, खासतौर पर जब दृश्यों में दो से अधिक पात्र हों। इसके अलावा रेडियो नाटक में कई बार कोई पात्र विशेष जब कोई हरकत, कोई एक्शन करता है तो उसे भी संवाद का हिस्सा बनाना पड़ता है।	
(ग)	अप्रत्याशित विषयों हम जो कुछ लिखेंगे, वह कभी निबंध बन पड़ेगा, कभी संस्मरण, कभी रेखाचित्र की शक्ल लेगा, तो कभी यात्रावृत्तांत की। इसीलिए हम उसे एक सामान्य नाम देंगे- लेख, ताकि ऐसा न लगे कि किसी विधा विशेष के भीतर ही लेखन करने का दबाव बन रहा है। ***उपर्युक्त बिंदु सांकेतिक हैं। अन्य बिंदु विचारणीय व स्वीकार्य हो सकते हैं।***	4
प्रश्न संख्या	**खंड - ग (पाठ्यपुस्तक आरोह तथा वितान पर आधारित प्रश्न)**	**अंक (40)**
6.	काव्यांश - पर आधारित प्रश्नों के उत्तर उत्तर :-	**05x01 =05**
(क)	iv खेत	1
(ख)	iv I-(3), II-(1), III-(2)	1
(ग)	ii कवि कर्म के चरण	1
(घ)	iv कथन तथा कारण, दोनों सही हैं, कारण कथन की सही व्याख्या करता है।	1
(ङ)	i यह चिरकाल तक आनंद देता है	1
7.	किन्हीं **दो** प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर :-	**02x03 = 06**
(क)	कविता में एक ओर जग-जीवन का भार लिए घूमने की बात करता है इसका आशय मनुष्य की सामजिकता से है| मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है इसलिए उसे सांसारिक दायित्वों का निर्वाह करना पड़ता है जैसे कवि कर रहे हैं| जीवन में दुख-सुख दोनों ही आते हैं। मनुष्य को अनेक कष्टों का सामना करना पड़ता है परन्तु वह इस जीवन से अलग नहीं हो सकता। दूसरी ओर मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ का आशय अन्य लोगों द्वारा किए गए आलोचना से है| कवि इसे हृदयहीन और स्वार्थी मानते हैं| वह अपनी मस्ती में रहते हैं और जहाँ तक हो सके प्रेम बाँटने की कोशिश करते हैं।	3

(ख)	सबसे तेज़ बौछारें तथा भादों के जाने के बाद सवेरा हुआ जो अत्यंत लालिमा और सुंदरता से परिपूर्ण था। वह सवेरा खरगोश की आँखों के समान लाल रंग का था। वातावरण स्वच्छ व धुला हुआ दिखाई देता है। धूप चमकीली होने लगी और फूलों पर तितलियाँ मंडराने लगीं। जब बच्चे के रंग-बिरंगे पतंग आकाश में उड़ाने लगे तो चारों ओर सीटियों और किलकारियों की आवाज़ गूंज उठी तथा तितलियों ने मधुर गुंजार शुरू कर दिया।	3
(ग)	कवि कहता है कि फूल एक निश्चित समय पर खिलते हैं। उनका जीवन भी निश्चित होता है, परंतु कविता के खिलने का कोई निश्चित समय नहीं होता है। उसकी जीवन अवधि असीमित है। वे कभी नहीं मुरझाती। उनकी कविताओं की महक सदैव फैलती रहती है।	3
8.	किन्हीं **दो** प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर :-	**02x02 = 04**
(क)	'हम समर्थ शक्तिमान' पंक्ति के माध्यम से मीडिया की ताकत व कार्यक्रम संचालकों की मानसिकता का पता चलता है। मीडिया कमी या मीडिया-संचालक अपने प्रचार-प्रसार की ताकत के कारण किसी का भी मजाक बना सकते हैं तथा किसी को भी नीचे गिरा सकते हैं। चैनल के मुनाफ़े के लिए संचालक किसी की करुणा को भी बेच सकते हैं। कार्यक्रम का निर्माण व प्रस्तुति संचालकों की मर्जी से होता है।	2
(ख)	कवि कहता है कि जिस प्रकार ज्यादा काली सिर अर्थात् पत्थर पर थोड़ा-सा केसर डाल देने से वह धुल जाती है अर्थात् उसका कालापन खत्म हो जाता है, ठीक उसी प्रकार काली सिर को किरण रूपी केसर धो देता है अर्थात् सूर्योदय होते ही हर वस्तु चमकने लगती है।	2
(ग)	हनुमान लक्ष्मण के इलाज के लिए संजीवनी बूटी लाने हिमालय पर्वत गए थे। उन्हें आने में देर हो रही थी। लक्ष्मण-मूर्छा के बाद पूरा माहौल शोकग्रस्त हो गया था। समस्त भालू-वानर सेना राम को देख अत्यंत दुखी थे। जैसे ही हनुमान जी संजीवनी बूटी लेकर शोक-सभा में पहुँचे तो वे पूरा का पूरा पर्वत ही अपने हाथ पर उठा लाए थे। हनुमान को देख राम तथा समस्त जन थोड़े खुश हुए तथा शीघ्र ही वैद्य जी ने लक्ष्मण को संजीवनी बूटी पिलाई तो लक्ष्मण उठ खड़े हुए। राम सहित पूरी वानर-सेना खुश हो गई। इस प्रकार शोक-ग्रस्त माहौल में हनुमान के अवतरण को वीर रस का आविर्भाव कहा गया है।	2
9.	गद्यांश - पर आधारित प्रश्नों के उत्तर :-	**05x01 =05**
(क)	iv व्यवसाय का चयन	1

(ख)	i स्वाधीनता के साथ जीना	1
(ग)	iii अपनी इच्छा से कार्य करने की स्वतंत्रता	1
(घ)	i इन अधिकारों को देने के बाद भी दासता की प्रक्रिया बनी रहती है	1
(ङ)	ii जातिगत भेदभाव को बढ़ावा देने वाले	1
10.	किन्हीं **दो** प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर :-	**02x03 = 06**
(क)	जातिप्रथा को श्रम विभाजन का ही एक रूप न मानने के पीछे आंबेडकर के निम्नलिखित तर्क हैं – • जाति प्रथा श्रम विभाजन के साथ-साथ श्रमिक विभाजन भी कराती है। सभ्य समाज में श्रमिकों का विभिन्न वर्गों में विभाजन अस्वाभाविक है। • जाति प्रथा में श्रम विभाजन मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं है। इसमें मनुष्य के प्रशिक्षण अथवा निजी क्षमता का विचार किए बिना किसी दूसरे के द्वारा उसके लिए पेशा निर्धारित कर दिया जाता है। यह जन्म पर आधारित होता है। • भारत में जाति प्रथा मनुष्य को जीवन भर के लिए एक पेशे में बाँध देती है, भले ही वह पेशा उसके लिए अनुपयुक्त या अपर्याप्त क्यों न हो। इससे उसके भूखों मरने की नौबत आ जाती है।	3
(ख)	यह बात बिलकुल सत्य है कि बाजारवाद ने कभी किसी को लिंग, जाति, धर्म या क्षेत्र के आधार पर नहीं देखा। उसने केवल व्यक्ति के खरीदने की शक्ति को देखा है। जो व्यक्ति सामान खरीद सकता है वह बाजार में सर्वश्रेष्ठ है। कहने का आशय यही है कि उपभोक्तावादी संस्कृति ने सामाजिक समता स्थापित की है। यही आज का बाजारवाद है।	3
(ग)	महामारी की त्रासदी से जूझते हुए ग्रामीणों को ढोलक की आवाज संजीवनी शक्ति की तरह मौत से लड़ने की प्रेरणा देती थी। यह आवाज बूढ़े-बच्चों व जवानों की शक्तिहीन आँखों के आगे दंगल का दृश्य उपस्थित कर देती थी। उनकी स्पंदन शक्ति से शून्य स्नायुओं में भी बिजली दौड़ जाती थी। ठीक है कि ढोलक की आवाज में बुखार को दूर करने की ताकत न थी, पर उसे सुनकर मरते हुए प्राणियों को अपनी आँखें मूंदते समय कोई तकलीफ़ नहीं होती	3

	थी। उस समय वे मृत्यु से नहीं डरते थे। इस प्रकार ढोलक की आवाज गाँव वालों को मृत्यु से लड़ने की प्रेरणा देती थी।	
11.	किन्हीं **दो** प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर :-	**02x02 = 04**
(क)	जीजी के अनुसार मनुष्य के पास जो चीज़ ना हो और वह उसका त्याग करके किसी और को देता है**,** तो उसका बहुत अच्छा फल मिलता है। इंदर सेना ऐसे समय में पानी की माँग करती थी**,** जब लोगों के पास स्वयं पानी नहीं हुआ करता था। लोग अपने घरों से निकाल-निकालकर पानी देते थे। लेखक को पानी की यह बर्बादी पसंद नहीं थी। ***उपर्युक्त बिंदु सांकेतिक हैं। अन्य बिंदु विचारणीय व स्वीकार्य हो सकते हैं।***	2
(ख)	भक्तिन के आ जाने के बाद महादेवी को देहात की संस्कृति, खान-पान, रहन-सहन, वेश-भूषा आदि का ज्ञान हो गया क्योंकि भक्तिन के अंदर दूसरों को बदल देने के गुण भरपूर मात्रा में विद्यमान थे। भक्तिन भोजन में मीठा बनाना बंद कर दिया। वह गाढ़ी दाल, मोटी रोटी, मकई की लपसी, ज्वार के भुने हुए, भुट्टे के हरे-हरे दाने की खिचड़ी, बाजरे के तिल वाले ठंढे पुए आदि बनाती। महादेवी वर्मा बार-बार प्रयास करके भी उसके स्वभाव को परिवर्तित नहीं कर पायीं और धीरे-धीरे उनका स्वाद बदल गया। इसलिए भक्तिन के आ जाने से महादेवी अधिक देहाती हो गई।	2
(ग)	'अवधूत' वह है जो सांसारिक मोह माया से ऊपर होता है। वह संन्यासी होता है। लेखक ने शिरीष को कालजयी अवधूत कहा है क्योंकि वह कठिन परिस्थितियों में भी फलता-फूलता रहता है। भयंकर गर्मी, लू, उमस आदि में भी शिरीष का पेड़ फलों से लदा हुआ मिलता है।	2
12.	किन्हीं **दो** प्रश्नों के लगभग 100 शब्दों में उत्तर :-	**02x05 =10**
(क)	यशोधर बाबू के माता पिता का देहांत बचपन में ही हो गया था, इसलिए वह बचपन से ही ज़िम्मेदारियों के बोझ तले दबे थे। वह बचपन में अपनी उम्र के बच्चों के साथ नहीं बल्कि बड़े बुज़ुर्गों के साथ रहते थे।पले बढ़े अत: वह उन परंपराओं को छोड़ नहीं सकते थे। यशोधर बाबू अपने आदर्श किशन दा से अधिक प्रभावित है और आधुनिक परिवेश में बदलते हुए जीवन मूल्यों और संस्कारों के विरुद्ध है। जबकि उनकी पत्नी अपने बच्चों के साथ खड़ी दिखाई देती है वह अपने बच्चों के आधुनिक दृष्टिकोण से प्रभावित है। वे बेटी के कहे अनुसार नए कपड़े पहनती है। वह अपने बेटों की जीवन में कोई ताँक-झाँक नहीं करती। यशोधर बाबू की पत्नी आज की आधुनिकता के हिसाब से रहती है और समय में परिवर्तन होता देख	5

	ख़ुद में भी परिवर्तन लाने का प्रयास करती है परंतु यशोधर बाबू भी पुराने रीति रिवाज़ों में बंधकर रहते हैं। ***उपर्युक्त बिंदु सांकेतिक हैं। अन्य बिंदु विचारणीय व स्वीकार्य हो सकते हैं।***	
(ख)	इस पाठ के सन्दर्भ में हम अगर लेखक के पिता जी और दत्ता जी राव का पढ़ाई-लिखाई के सम्बन्ध में रवैया देखें तो पता चलता है कि दत्ता जी राव का रवैया लेखक के पिता जी से बेहतर था। वह पढ़ाई-लिखाई के महत्त्व को भली-भांति जानते थे इसलिए जब दत्ता जी को पता चला कि लेखक के पिता उसे पढ़ने के लिए पाठशाला नहीं जाने देते तो उन्होंने लेखक के पिता को बहुत भला-बुरा सुनाया और कहा की बेटे और पत्नी को खेतो में काम में लगा कर तू पूरा दिन क्या करता हैं, तू कल से बेटे को पढ़ने भेजेगा अगर तेरे पास फीस के पैसे नहीं है तो मैं उसकी फीस दूंगा। दत्ता जी के सामने लेखक के पिता ने 'हां' तो के दी पपर बाद में वे आनंद को स्कूल भेजने के पक्ष में नहीं थे। जिससे ज्ञात होता है कि पिता जी का रवैया पढ़ाई-लिखाई के प्रति ठीक नहीं था।	5
(ग)	पुरातत्ववेत्ताओं ने जो भी खुदाई की और खोज की। उसमें उन्हें मिट्टी के बर्तन, सिक्के, मूर्तियाँ, पत्थर और लकड़ी के उपकरण मिले। इन चित्रों के फलस्वरूप यही बात सामने आई कि लोग समय के अनुरूप इन वस्तुओं का उपभोग करते थे। दूसरा उनकी नगर योजना भी उनकी समझ का पुख्ता प्रमाण है। आज की नगर योजना भी उनकी योजना के समकक्ष नहीं ठहरती। जो कुछ उन्होंने नगरों, गलियों, सड़कों को साफ़-सुथरा रखने की विधि अपनाई, वह उनकी समझ को ही दर्शाती है। ***उपर्युक्त बिंदु सांकेतिक हैं। अन्य बिंदु विचारणीय व स्वीकार्य हो सकते हैं।***	5
	--x----x----x----x--	